प्रेस विज्ञप्ति

आचार्य महाप्रज्ञ चातुर्मास व्यवस्था समिति

सरदारशहर 331 401

Email : terapanthpr@gmail.com * Fax : 01564-220 233

14वीं पुण्य तिथि पर हुआ भव्य कार्यक्रम

आचार्य तुलसी दिव्य पुरुष थे : आचार्य महाश्रमण

सरदारशहर 29 जून, 2010

अणुव्रत आन्दोलन से सामाजिक रूढ़ियों में परिवर्तन की लहर चलाने वाले आचार्य तुलसी की 14वीं पुण्यतिथि पर आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया। श्री समवसरण में आयोजित इस कार्यक्रम में उपस्थित जनमेदनी को संबोधित करते हुए कहा कि आचार्य तुलसी एक दिव्य पुरुष थे। उन्होंने चित्त के संयम की साधना की एवं दूसरों को भी संगम की साधना में आगे बढ़ने का अवसर प्रदान किया। आचार्य महाश्रमण ने कहा कि आचार्य तुलसी ने अपने जीवन में विरोधों का सामना किया। विरोध व्यक्तित्व को सिखाने में योगभूत बनते हैं, जो विरोधों को शांत मन से झेल लेते हैं वे महापुरुष बन जाते हैं। आचार्य तुलसी ने प्रत्येक विरोध को शांत मन से झैला और अपनो मंजिल की तरफ बढते रहे।

आचार्य महाश्रमण ने आचार्य तुलसी के महाप्रभाव दिवस को विसर्जन दिवस के रूप में मनाये जान की परम्परा का उल्लेख करते हुए कहा कि विसर्जन त्याग की एवं आसक्ति छोड़ने की भावना है। आज के दिवस से प्रेरणा लेकर हम विसर्जन की भावना को विकसित करें।

साध्वी प्रमुखा कनकप्रभा ने कहा कि दो प्रकार के व्यक्ति होते हैं। कुछ अपने समय में चर्चित होते हैं और कुछ अविष्मरणीय होते हैं। अनेक सहस्रशताब्दियों तक जिनका व्यक्तित्व चमक बिखेरता रहता है। उनमें एक नाम है आचार्य तुलसी। उन्होंने मात्र 11 वर्ष की अवस्था में अष्टमाचार्य कालूगणी के करकमलों से दीक्षा ग्रहण की और अपनी होनहार प्रतिभा से छोटीवय में ही अनेक मुनियों का निर्माण कर दिया। आचार्य तुलसी ने 22 वर्ष की युवावस्था में संघ के संचालन का दायित्व संभाला। जिस सूझबूझ से संघ को विकास के नये आयाम प्रदान किये वह सबके लिए आश्चर्यकारी बन गये। इतनी छोटी अवस्था में विलक्षण निर्णय शक्ति के कारण वर्चस्व स्थापित किया। अपने 60 वर्षों के शासनकाल में जितने निर्णय किये उनको संकलित किया जाये ता उत्तरकालिन आचार्यों के लिए निधि बन जायेंगे।

मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुत विभा ने कहा कि आचार्य तुलसी दर्शन के चलते फिरते विश्वविद्यालय थे। इस विश्वविद्यालय में अध्ययन कर आचार्य महाप्रज्ञ दार्शनिक जगत में चर्चित हुए। उन्होंने मानव जाति के लिए सम्प्रदाय से ऊपर उठकर काम किया। साध्वी गुप्तिप्रभा ने भी विचार रखे। मुनि महावीर कुमार ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा संस्कृत में रचित तुलसी अष्टकम से मंगलाचरण किया। साध्वी समुदाय ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी उज्जवलरेखा आदि साध्वियों ने गीत के द्वारा अपनी भावांजलि समर्पित की। तेरापंथ महिला मण्डल एवं तेरापंथ कन्यामण्डल ने भी गीतों के द्वारा भावनाएं रखी। अनेक वक्ताओं ने आचार्य तुलसी के व्यक्तित्व एवं कतृत्व पर प्रकाश डाला।

– **शीतल बरड़िया** (मीडिया संयोजक)